بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 20 दिसम्बर **2024,** स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

सन 6 हिजरी के कुछ सिराया (सैन्य अभियान) के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान तथा दुनिया की बिगड़ती हुए राजनैतिक स्थिति एवं आसमानी बलाओं के हवाले से दुआओं का आग्रह।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-20.12.24

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय के सम्बन्ध में युद्धों तथा सैन्य अभियानों के हवाले से वृत्तान्त बयान हो रहे हैं। इस स्मबन्ध में एक अभियान उकाशा बिन मोहसन का वर्णन भी मिलता ह। यह सैन्य अभियान गमज़ मर्ज़ूक़ की ओर रबीउल अव्वल 6 हिजरी में हुआ। सीरत खात्मुन्नबिय्यीन सलल्लाहु अलैहि वसल्लम में लिखा है कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक मुहाजिर सहाबी उकाशा बिन मोहसन रज़ी. को चालीस मुसलमानों पर अफसर बनाकर क़बीला बनू असद की तरफ मुक़ाबले के लिए भिजवाया, परन्तु मुसलमानों के आने की ख़बर पाकर ये लोग आस पास के इलाक़ों में छुप गए।

इसी तरह एक अन्य सैन्य अभियान दस आदमियों के साथ हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. के नेत्रित्व में रबीउससानी 6 हिजरी में बनू सालबा तथा अन्य लोगों के ओर भेजा गया। जब यह जमात वहां पहुँची तो विरोधियों के सौ आदमियों ने इन्हें घेर लिया और भालों एवं तीरों से हमला करके सब को शहीद कर दिया। हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. गम्भीर ज़ख़्मी होकर गिर पड़े, विरोधियों ने उनके कपड़े उतार लिए और वहीं पड़ा छोड़ गए। एक मुसलमान मृतकों के पास से जा रहा था, उसने इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिउन पढ़ा। जब हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. ने उसको सुना तो हरकत की, उसने आप रज़ी. को खाना दिया और आप रज़ी. को सवारी पर बिठाकर मदीना ले आया।

मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. के साथियों की शहादत के अपराधियों से बदला लेने के लिए एक सैन्य अभियान का वर्णन मिलता है। यह आभियान हज़रत अबू उबैदः बिन जर्राह रज़ी. कहलाता है। इसके विस्तारण में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने लिखा है कि मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. के साथियों की शहादत के साथ यह सूचना मिली थी कि क़बीला बनू सालबा मदीने के ग्रामीण क्षेत्रों पर हमले का इरादा रखते हैं। अतः आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदः बिन अलजर्राह रज़ी. के नेत्रित्व में चालीस शक्तिशाली सहाबियों को रवाना फ़रमाया। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का निर्देश था कि रातों रात यात्रा करके सुबह सवेरे उन तक जा पहुँचो, अतएव आज्ञा पालन में ठीक सुहब सवेरे उन्होंने विरोधियों को घेर लिया तथा वे थोड़े से मुक़ाबले के बाद भाग निकले। अबू उबैदः रज़ी. ने विजय से प्राप्त धन सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा किया और मदीने लौट आए।

इस अभियान में जिन दो सहाबीयों का वर्णन है, अर्थात मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. और अबू उबैदः बिन अल्जर्राह रज़ी. वे दोनों प्रतिष्ठित सहाबीयों में से थे। मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. अपने निजी गुणों एवं योग्यता के अतिरिक्त, कअब बिन अशरफ़ यहूदी की हत्या के भी हीरो थे क्यूँकि यह दुष्ट उन्हीं के हाथों से मारा गया था। मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. अंसार के औस नामक क़बीले से सम्बन्ध रखते थे और हज़रत उमर रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में उनके विशेष विश्वस्त समझे जाते थे। अतः हज़रत उमर सामान्यतः उन्हीं को अपने कार्यकर्ताओं की शिकायतों के विश्लेषण के लिए भिजवाया करते थे। हज़रत उसमान के निधन के बाद जब मुसलमानों में भीतरी फ़ितनों का द्वार खुला तो मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. ने अपनी तलवार को एक पत्थर पर तोड़कर अपने हाथ में केवल एक छड़ी ले ली और जब किसी ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से मैंने यही सुना हुआ है कि जब मुसलमानों के अन्दर आपसी हत्या एवं द्वेष का द्वार खुले तो तुम तलवार को तोड़कर घर में इस तरह दुबक कर बैठ जाना, जिस तरह किसी कमरे में उसका फ़र्श पड़ा होता है। संभतः यह आदेश केवल मुहम्मद बिन मसलमा अथवा इस उपद्रव के लिए था, अन्यथा कई बार भीतरी फ़ितनों की रोकथाम के लिए मुक़ाबला भी एक उच्च स्तरीय दीन की सेवा का रंग रखता है।

दुसरे सहाबी अबू उबैदः बिन अलजर्राह रज़ी. थे। ये चोटी के सहाबीयों में से थे और क़ुरैशी थे। इनकी शान की बुलंदी इस बात से प्रकट होती है कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हें अमीनुल मिल्लत की पदवी प्रदान की थी और आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के पश्चात हज़रत अबू बकर रज़ी. ने जिन दो सहाबीयों को ख़िलाफ़त के योग्य समझा था उनमें से एक ये भी थे। अबू उबैदः हज़रत उमर रज़ी. के दौर में ताऊन की महामारी से निधन पाकर शहीद हुए।

फिर एक सिरया है, एक सिरया ज़ैद बिन हरसा, रबीउल आख़िर 6 हिजरी में बनू सुलैम की और भेजा गया।

इसी तरह एक अन्य सिरया ज़ैद बिन हारसा रज़ी. के नेत्रित्व में एक सौ सत्तर सहाबीयों के साथ जमादिल ओला 6 हिजरी ऐस नामक स्थान की ओर भेजा गया।

इन घटनाओं में आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामाद अबुल आस बिन रबीअ रज़ी. के क़ैद होने और इसलाम क़ुबूल करने का वर्णन भी मिलता है। यह अपने व्यापारिक सामान के मुसलमानों द्वारा क़ब्ज़ा किए जाने के बाद मदीने आए तथा ज़ैनब रज़ी. सुपुत्री रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरण माँगी, हज़रत ज़ैनब ने इन्हें शरण दी। जब रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह पता चला तो आप स. ने लोगों से फ़रमाया कि मुझे भी इसका अभी ज्ञान हुआ है और मैं पहले इस बात को नहीं जनता था। आप स. हज़रत ज़ैनब रज़ी. की प्रार्थना पर अबुल आस का सामान वापस करने की सिफारिश की, जिस पर न केवल अबुल आस बल्कि अन्य सभी लोगों का माल वापस कर दिया गया। अबुल आस वापस मक्का गए और लोगों को उनके माल वापस पहुंचा कर मक्का वालों के सामने अपने इसलाम को क़ुबूल करने की घोषणा की। इसलाम क़ुबूल करने के बाद अबुल आस रज़ी. मदीने आए तो रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब रज़ी. को बिना किसी नए निकाह के उनके पास लौटा दिया। हज़रत अबुल आस रज़ी. का कारोबार मक्का में था इस लिए वे मदीने में अधिक समय तक न रुक सके और मक्का लौट आए। 12 हिजरी में अबुल आस रज़ी. ने वफात पाई।

एक युद्ध बनू लह्यान जमादिल ओला 6 हिजरी में हुआ। इस युद्ध के परिपेक्ष में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. रजीअ नामक घटना का वर्णन किया है कि जब दस निर्दोष मुसलमानों को अत्यन्त निर्दयता से शाहीद कर दिया गया था। चूंकि बनू लह्यान अभी तक मुसलमानों के विरुद्ध षडयंत्रों में लिप्त थे, अतः आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उचित समझा कि उनकी कुछ ख़बर ले ली जाए। अतएव आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथ दो सौ सहाबा और बीस घोड़े ले कर उनकी ओर रवाना हुए। आँहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम गुप्त रूप से वहां पहुँच गए किन्तु बनू लह्यान को आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने की सूचना मिल गई और वे पहाड़ों की चोटियों में जा छुपे और उनमें से कोई भी पकड़ा नहीं जा सका। आप स. एक या दो दिन वहां विश्राम फ़रमाया और कई पार्टियों को आस पास की तलाशी में भेजा लेकिन कोई पकड़ा न जा सका। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम इस यात्रा में जब उस स्थान पर पहुंचे जहाँ आप स. के सहाबी शहीद हुए थे तो आप स. अति दुःख की दशा छा गई। आप स. अत्यन्त वेदना के साथ उन शहीदों के लिए दुआ मांगी।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. लिखते हैं कि इस यात्रा से वापसी पर आप स. ने एक दुआ की जो बाद में मुसलमान प्रायः अपनी महत्त्व पूर्ण यात्राओं के समय पढ़ा करते हैं, और वह दुआ यह है- آءِبُوْنَ تَآءِبونَ سَاجِدُونَ لَرَبِّنَا حَامِدُوْنَ अर्थात हम लोग अपने ख़ुदा की तरफ़ लौटने वाले हैं, उसी की ओर झुकने वाले हैं, उसी की इबादत करने वाले हैं, उसी के सामने गिरने वाले और अपने रब की प्रशंसा के गीत गाने वाले हैं। आँहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने बाद की यात्राओं में भी साधारणतः यही दुआ पढ़ते थे, और इसके साथ कई बार ये शब्द बढ़ाया करते थे- اَللّٰهُ وَحْدَهٗ وَنَصَرَ

عَبْدَہٗ وَھَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَہٗ अर्थात हमारे ख़ुदा ने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की सहायता फ़रमाई और दुश्मन की सेनाओं को अपने दम से नष्ट कर दिया।

यह दुआ एक विशेष रंग रखती है और इस दुआ से उन भावनाओं का अध्यन करने का अवसर मिलता है जो उस विकट परिस्थिति में आँहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र दिल में मौजूद थे और जिन्हें आप स. अपने सहाबीयों के अन्दर पैदा करना चाहते थे। इस दुआ में तड़प छुपी है कि जो रुकावट मुसलमानों की इबादत और इसलाम की शांति प्रिय तबलीग़ के रास्ते में डाली जा रही है, अल्लाह तआला इसे दूर फ़रमाए।

एक अभियान ज़ैद बिन हारसा है जो जमादिल आख़िर 6 हिजरी में हुआ। इस सिरिय्ये में आँहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. को पन्द्रह आदमियों के साथ बनू सालबा बिन असद की ओर भिजवाया। इस सिरिय्ये में लड़ाई नहीं हुई।

यह क्रम जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूर ए अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के तेज़ी से बदलते हुए हालात के सम्बन्ध में फ़रमाया कि दुनिया के जो हालात हैं वे सब जानते हैं, शाम देश जो स्थिति उत्पन्न हुई है वह अभी स्पष्ट नहीं है। कहने को तो एक अत्याचारी सरकार समाप्त हुई है, दुआ करें कि आने वाला शासन न्याय से काम लेने वाला हो। अल्लाह तआला इन इलाक़ों के अहमदियों को अपनी अमान में रखे। विश्लेषण करने वाले तो लिखते हैं कि जन साधारण तो प्रत्यक्षतः खुशियाँ मना रहे हैं किन्तु आगे क्या होगा, कुछ पता नहीं। इस्राईल भी इन इलाक़ों पर अकारण हमले कर रहा है। प्रत्यक्षतः इसलामी दुनिया के विरुद्ध इनके इरादे शंका जनक लगते हैं। पाकिस्तान के लिए भी इस हवाले से बहुत दुआ करें, ईरान के लिए और अन्य देशों के लिए भी। अल्लाह तआला मुसलमानों को भी बुद्धि दे, अल्लाह तआला सब अहमदियों को भी सुरक्षित रखे। अहमदी न तो मुसलमानों के हाथ से सुरक्षित हैं, और न ही उन ग़ैरों के हाथों, जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आजकल दुनिया में तूफ़ान भी अधिक आ रहे हैं, अल्लाह तआला दुनिया को आसमानी बलाओं से भी सुरक्षित रखे।

खुतबः के अन्तिम भाग में हुज़ूर अनवर ने दो मृतकों मुकर्रम अमीर हसन मरानटरी साहब शहीद सुपुत्र दर मुहम्मद साहब नुसरताबाद, मीरपुर ख़ास, जिनको 13 दिसम्बर की सुबह फाईरिंग करके शहीद कर दिया गया था और मुकर्रम मौलाना अब्दुस्सत्तार रऊफ साहब मुबल्लिग़ सिलसिला मलेशिया का सदवर्णन फ़रमाया और जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा की। हुज़ूर अनवर ने मृतकों की मग़फ़िरत और दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131